व्याख्यान - 4 (प्रतिष्ठा)

स्नातक प्रथम खण्ड

अतीत (कथा संग्रह)

'रहस्य' कथाक कथावस्तु

अतीत कथा संग्रहक दोसर कथा थिक 'रहस्य'। ई सर्वप्रथम 'वैदेही' अंक नवम्बर-दिसम्बर 1955 मे प्रकाशित भेल। एकरा फ्रायडक काम भावना पर आधारित कथा मानल जा सकैत अछि। एहिमे पति-पत्नीक भिन्न-भिन्न मानसिकताक परिचय देल गेल अछि, संगहि संग जाहि रूपमे घटनाक्रम बदलैत अछि आ कथाक अंत होइत अछि ओहिमे बेमेल विवाह कें एक कारण सेहो मानि सकैत छी। कतेको ठाम ई देखल जाइत अछि जे पति-पत्नीक मध्य वैचारिक मतभेद रहलाक बादो सामान्य रूपमे ओ लोकनि सामाजिक मान्यताक निर्वहन करैत छथि, किन्तु जखन एहि अभिनयक पटाक्षेप होइत अछि तँ एकर परिणाम भयंकर होइत अछि।

कथा नायिका कान्ताक बौद्धिक आ व्यवहारिक ज्ञानक प्रस्फुटन जाहि रूपें कथाकार कयलनि अछि, ताहि सँ स्त्रीक सहनशीलता, ओ गांभीर्य बुद्धिक परिचय भेटैत अछि। कान्ताक ई कहब जे प्रेम सदैव संघर्षक कारण रहल अछि, प्रेमक प्रति ओकर भाव कें स्पष्ट करैत अछि। कथाकार कान्ताक विचारधारा सँ प्रभावित भेल बुझि पड़ैत छथि। ई भिन्न बात जे एहि प्रकारक विचारक कोनो अस्तित्व नहि मानल जा सकैत अछि। लेखक स्वयं कहैत छथि — "हम मानि लेलहुँ जे शरीर मात्र सत्य थिक, आत्माक कोनो अस्तित्व नहि। प्रेम ओ वासनाक भेद कृत्रिम,

Scanned with CamScanner

पुरुष स्वार्थवश शब्दक मोहजाल सँ वास्तविकता केँ एतेक दिन सँ अपने छलैत छथि(एहि कथा संग्रह में)

हिनक रहस्य शीर्षक कथाक नायक वैद्यनाथ तथा नायिकाक कथाक मानसिक स्तर मे कइ बेसी भिन्नता रहितहुँ, दुन्नु दम्पति पारिवारिक सौमनस्य रखबाक अभिनय बहुतो दिन धरि सफलतापूर्वक करैत रहलाह किन्तु हिनका भीतरिक असंतोष तखन जाए कइ देखार भए गेल जखन कान्ता आत्महत्या कइ लेलैन्ह तथा वैद्यनाथ बताह भइ गेलाह। (प्रो॰ अमरनाथ झा, मैथिली अंक 7) मुदा कान्ताक आत्महत्याक कारणक रूपमे जाहि प्रकारक समस्या समक्ष कथाकार उत्पत्ति अछि से सबमक विकृति मानसिकताक परिचायक अछि। कान्ताक चरित्र पर परोक्ष रूपे कलंक लाछन लगाओल गेल अछि से कथा संग्रहक एहि अंश मे देखू — " पता लागल जे कान्ताक चरित्र आरम्भहि सँ भ्रष्ट रहैन्हि; कओलेज मे कतेक 'लीला' कयने रहथि ~~एवं माता~~ मातृत्वक मिथ्या आकांक्षा सँ वैद्यनाथक शरण लेलनि। ~~एवं प्रकारे~~

कखनहु- कखनहु जीवनमे सम्बन्धक निकटता आत्मीय नहि नाटकीय रहैत अछि। मनुष्य केँ सम्बन्धक सत्यताक आकलन करबामे भ्रमक स्थिति उत्पन्न भए जाइत अछि। लेखक केँ सेहो कान्ता वैद्यनाथक सम्बन्धक प्रसंग प्रारम्भ मे भ्रम भेल छलनि मुदा पश्चात हुनका आभास भइ जाइत छनि जे सभ किछु ठीक नहि अछि — " हम एखनहु नहि जानैत छी जे कान्ता आत्महत्या केलनि वा बैद्य हुनका विष देलथिन वा धोखासँ विष खेला गेलानि। हम

Date: / /

एतबे कहि संकेत छी जे एक-दू अवसर एहन उपस्थित भेल रहय जखन हमरा ई सन्देह भेल जे ओ दुनू गोटए आदर्श दम्पतिक अभिनय एतेक कुशलतापूर्वक कऽ रहल छलाह जे अभिनय कें जीवन यथार्थ रूपमे बूझय लगलाह, परन्तु वास्तव मे ओ एक-दोसराक लेल अनुपयुक्त ~~छलाह~~, तथा आदर्शक पालन करबाक प्रयत्नमे अपन रहथि व्यक्तित्वक हनन कऽ रहल छलाह। (कथा संग्रह सँ)

अन्तमे इएह कहि संकेत छी जे कान्ताक रूपमे कथाकार एकटा एहन स्त्री कें पाठकक समक्ष अनैत छथि जकरा पर समाज कतेको प्रकारक लांछन लगबैत अछि, जेना कखनो ड्राइवरक संग सम्बन्ध तऽ कखनो कालेज मे कतेको नित नूतन प्रेमी होयबाक आरोप, मुदा कान्ताक अहमाक असंतृप्तिक मुख्य कारण छल ओकरा प्रति नरेन्द्रक शारीरिक आकर्षणक कमी।

एतावता प्रथम पुरुषमे वाहल 'रहस्य' कथा पति-पत्नीक मध्य अन्तर्द्वन्दक कथा कहैत अछि।

क्रमशः

डॉ. पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग,
विश्वेश्वरसिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, मधुबनी

Scanned with CamScanner